**डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र**

**स० प्रा० मैथिली विभाग**

**सी० एम० जे० कॉलेज**

**दोनवारी हाट खुटौना मधुबनी**

**मो० न० 9546743796**

**Email –** [**mishrasm966@gmail.com**](mailto:mishrasm966@gmail.com)

**B. A, III**

**रसराज श्रृंगार रस ------**

**अस्तु , एहि रूपसँ शास्त्रीय आधार पर श्रृंगार रस कें ‘ रसराज ‘ आ सर्वश्रेष्ठ रस स्वीकार कएल जा सकैत अछि | एकर अतिरिक्त श्रृंगार रस कें ‘ रसराज ‘ प्रमाणित करबाक हेतु अनेक प्रामाणिक कारण देल जा सकैत अछि |**

**सर्वप्रथम बात त ई अछि जे श्रृंगारक आधार ‘ काम ‘ अछि | ई ‘ काम ‘ पशु – पक्षी तथा मानवमे समान रूपसँ विद्यमान अछि |चारि प्रमुख पदार्थ सभमे सेहो ‘ काम ‘ क गणना कएल गेल अछि | वृहदारण्यकक अनुसार पुरुष काममय अछि “ काममय एवायं पुरुष: | “ विष्णुपुराणक धर्म – संहिता मे सेहो “ काम: सर्वमय: पुसां स्वसंकल्प समुदभव: “ कहल गेल अछि |**

**दोसर बात ई अछि जे काम सर्वत्र अर्थात सभ देश आ सभ अवस्थावला स्त्री पुरुष मे विद्यमान रहैत अछि | जखन अन्य रसक आस्वादन प्रत्येक व्यक्ति कें नहि भेटैत अछि | आचार्य रुद्रटक कथन छनि ; -**

**“ अनुसरति रसानां रस्यतामस्यनान्य: |**

**सकलमदिमनेन व्याप्तमाबालवृद्धम || “**

**एहि हेतु भोजराज सेहो कहैत छथि जे अन्य रस सभक आस्वादन सभ लोक नहि कए सकैत अछि |**

**तेसर बात ई अछि जे एकर अनेक भेद होइत अछि – ईश्वरक प्रति रति अछि त ओतए भक्ति रस , माधुर्य रस ; बच्चाक प्रति रति अछि त ओतए वात्सल्य रस आ स्त्री – पुरुषक एक दोसरक प्रति रति अछि तैं श्रृंगार रस होइत अछि |**

**चारिम बात ई अछि जे श्रृंगार रसक दू पक्ष होइत अछि – संयोग आ वियोग | एहि रूपक दू पक्षक अनुभव आन कोनो रसमे नहि होइत अछि |**

**पाँचम बात ई अछि जे एकर अंतगर्त समस्त संचारी भाव आबि जाइत अछि | भरतमुनि कहैत छथि - “ एवमेष सर्वभाव संयुक्त: श्रृंगारी भवति | “ मुदा अन्यान्य रसमे संचारी भावक संख्या कम होइत अछि |**

**छठम बात ई अछि जे श्रृंगारमे कोमलतम भावना सभक अभिव्यक्ति होइत अछि | अतएव एहिमे मात्र कोमल भावनाक महत्व रहैत अछि | मुदा अन्यान्य रसमे एतेक कोमल भावनाक अभिव्यक्ति नहि होइत अछि |**

**सातम बात ई अछि जे मात्र एक श्रृंगार रस टा एहन अछि जाहिमे दुनू – आलम्बन आ आश्रयक चेष्टा सभ परस्पर एक – दोसर कें प्रभावित करैत अछि | भरतमुनि सेहो लिखैत छथि – “ एवमेष समभाव संयुक्त श्रृंगारो भवति | “ अर्थात ई सम्पूर्ण भाव सँ युक्त होइत अछि |**

**आठम बात ई अछि जे श्रृंगार रस सँ सन्त – महात्मा तक सेहो अपन बचाव नहि कए पबैत छथि | एकर अतिरिक्त इहो देखल गेल अछि जे कोनो साधनाक अंतिम परिणति श्रृंगारहि सँ होइत अछि| कबीर सदृश सन्त सेहो अपना कें ‘ रामक बहुरिया ‘ कहिकें आनंद विभोर भए जैत छथि | एकर अतिरिक्त तुलसीक रामायण श्रृंगार रस पूर्ण अछि |**

**नवम बात ई अछि भारतीय आचार्य गणक संग – संग पाश्चात्य काव्यशास्त्री लोकनि सेहो श्रृंगारक व्यापकत्व कें स्वीकार कए लेने छथि | एहि क्रममे हम देखैत छी जे फ्रायड सदृश मनोविश्लेषणवादी श्रृंगारक व्यापकत्वक घोषणा बहुत जोर दए कें करैत छथि | वर्तमान युगमे त सेहो एहि रसक राज अछि |**

**एतावता ज्ञात होइत अछि श्रृंगार रस मे व्यापकता अछि | एहिमे अनेक स्थायी , संचारी आ सात्विक भाव कें आत्मसात करबाक शक्ति अछि | एकर अतिरिक्त उत्कट आस्वाद्यता सेहो एहि रस मे भेटैत अछि | अन्यान्य रसक तुलनामे श्रृंगार रस अत्यधिक चर्वणीय अछि | श्रृंगार रसक सभसँ विशेषता ई अछि जे एहिमे अन्य रस सभकें समाहित करबाक क्षमता अछि | एतवए नहि श्रृंगार रसक विभावमे अपन विशिष्ट विशेषता अछि | श्रृंगारक आलम्बन नायक – नायिका अछि , एकर संग प्रत्येक पाठक वा दर्शक वा श्रोताक तादात्म्य स्थापित भए जाइत अछि | मुदा अन्यान्य रसक आलम्बन एहि विशेषता सँ रहित अछि | श्रृंगारक उद्दीपन अन्यान्य रसक तुलनामे अधिक रमणीय , मनमोहक , आकर्षक आ व्यापक अछि | श्रृंगारक उद्दीपन सर्वत्र आ सभ कालमे सुलभ अछि | सभ मिलाए कें कहल जा सकैत अछि जे मानव हृदयक वृत्ति सभक अधिकतम मात्रामे एहिमे चित्रण होइत अछि आ मानव हृदयक सभ वृत्ति एहिमे ओही मात्रा मे रमण सेहो करैत अछि | एहि हेतु हमरा भोजराजक कथन युक्ति संगत लगैत अछि –**

**“ श्रृंगारी चेत्कवि: काव्ये जातंरसमयं जगत् |**

**स एव चेद श्रृंगारी नीरसं सर्वमेव तत || “**

**अंततोगत्वा हम इएह कहब जे सभ दृष्टिकोण सँ श्रृंगार रस ‘ रसराज ‘ क पदकें आसीन करबाक सभ प्रमाण रखैत अछि | अतएव श्रृंगार रस ‘ रसराज ‘ आ सर्वश्रेष्ठ रस अछि |**